पाठ 18. दुष्टता का परिणाम

पाठ का परिचय

बहुत समय पहले की बात है। मंगोलिया देश के दरहान शहर में दो मित्र रहते थे। उनके नाम थे– संजाबयार और नंबारीन। संजाबयार मित्र होकर भी मन से नंबारीन से ईर्ष्या रखता था। एक बार दोनों मित्र घूमते-घूमते एक वीरान जगह पहुँच गए। दोनों को भूख लगी। वहाँ उन्हें एक पेड़ पर मीठे फल लदे दिखाई दिए। संजाबयार को दुष्टता सूझी। उसने नंबारीन को सहारा देकर ऊपर चढ़ाया और जब नंबारीन ने उसे फल पकड़ा दिए तो वह फल लेकर नौ-दो ग्यारह हो गया। नंबारीन वहीं लटका रह गया। उसे वहाँ एक गिद्ध दिखाई दिया, जो उड़ने ही वाला था। उसने गिद्ध के पंजे पकड़ लिए। गिद्ध ने उसे एक महल के समीप उतार दिया जहाँ कुछ जानवर बैठकर आपस में चर्चा कर रहे थे कि राजकुमारी की बीमारी कैसे दूर होगी। नंबारीन ने यह सुन लिया और जाकर राजा से बता दिया। राजकुमारी ठीक हो गई। राजा ने नंबारीन को ढेरों इनाम दिए। संजाबयार को जब यह पता चला तो वह भी उन जंगली जानवरों के पास जा पहुँचा। परंतु जंगली जानवरों ने उस पर आक्रमण कर दिया। वह बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भागा। अब वह समझ गया था कि दूसरों का बुरा चाहने वालों का कभी भला नहीं होता। उसने भी अब नंबारीन की तरह अच्छा इनसान बनने का निश्चय किया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हमें सदा दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। यदि अपने मन में हम किसी के लिए गलत भावना रखते हैं तो उसका परिणाम हमें कहीं न कहीं भुगतना ही पड़ता है। मनुष्य को हमेशा अच्छे विचार रखने चाहिए तथा जहाँ तक हो, दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

पाठ का वाचन

पाठ के प्रत्येक वाक्य का आदर्श वाचन करें। वाक्य में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताएँ। आवश्यक वाक्यों का आशय स्पष्ट करें। बच्चों से पढ़े गए वाक्यों से संबंधित प्रश्न करें। यह अवश्य जानें कि बच्चों को आशय तथा पाठ ठीक से समझ में आया या नहीं।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- नंबारीन और संजाबयार में से कौन सही था?
- संजाबयार के साथ जो हुआ वह सही था या गलत?
- राजा ने नंबारीन को इनाम क्यों दिया?
- क्या संजाबयार ने जो किया वह सही था?
- तुम जीवन में क्या करना पसंद करोगे?